

अगर आपके अंदर स्नेह, दयालुता और कोमलता नहीं है तो जीवन नीरस, कठोर और कुरूप हो जाएगा। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं अपनी जिंदगी को राजनीति से, नौकरी और परिवार की चिंताओं से भर लेते हैं। आप भयभीत रहने लगते हैं और धीरे-धीरे अपनी सारी संवेदनशीलता खो देते हैं। तब आप न तो डूबते सूरज को, न बादलों को और न ही सितारों को देख पाते हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ आपकी बुद्धि आपके जीवन को तहस-नहस करने लगती है...

— जे. कृष्णमूर्ति

जे. कृष्णमूर्ति परिसंवाद

जून 2009

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया का त्रैमासिक हिंदी पत्र

सितंबर, दिसंबर, मार्च एवं जून में प्रकाशित

वार्षिक शुल्क : रु. 100.00 आजीवन शुल्क : रु. 1000.00

संपादक : कृष्णनाथ

सहसंपादक : मुकेश

इस अंक में :

क्या है स्वतंत्रता?	4
डर क्या है?	15
सृजन का संसार	22

संपादकीय

यह अंक स्वतंत्रता एवं भय के बारे में है। कृष्णजी विद्यार्थियों से उनके जैसे ही सहज ढंग से बात करते हैं। स्वतंत्रता जो चाहें सो करने में नहीं है। जब मन होगा खाना खाने जाऊंगा, जब मन होगा क्लास में जाऊंगा या नहीं जाऊंगा, यह स्वतंत्रता नहीं। अव्यवस्था है। जबकि व्यवस्था स्वतंत्रता का आधार है। अगर जीवन में व्यवस्था अपने आप है तो उसमें से स्वतंत्रता उपजती है। उदाहरण के लिए अगर अपने आप सूरज के उगने के साथ उठ जाएं, जब सृष्टि जाग रही है, पशु, पक्षी और गंगा का जल सब कुछ; और नहा-धो लें तो सारा दिन अपने पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने या टहलने के लिए मिल जाता है। दिन भर के लिए आपको फुर्सत है, अवकाश है, स्वतंत्रता है। लेकिन अगर नहीं उठते, घंटी बजने पर उठाये जाते हैं, तो फिर इसमें स्वतंत्रता कहां? बाह्य नियंत्रण है। जो हमें खलता है। जबकि स्वतंत्रता में आनंद है।

भय के बारे में कृष्णजी कैलीफोर्निया में टहलते हुए सांप को देखते हैं। कैसे देखते हैं? क्या करते हैं यह तो आप उनके ही शब्दों में पढ़ें-गुनें। और अपने से पूछें कि आप क्या करते हैं? या कैसे बरतते हैं?

अगर यह अंक ऐसे प्रश्न उठा सके तो ही इसका अर्थ है, अन्यथा नहीं। अंग्रेजी मूल से अनुवाद श्री मुकेश का है जिसमें मूल का स्पर्श है।

इन शब्दों के साथ यह अंक आपके लिए प्रस्तुत है।

- संपादक

विद्यार्थियों के साथ कृष्णमूर्ति

क्या है स्वतंत्रता?

क्या आप कभी नदी के किनारे बैठे हैं और सामने बहते पानी को देखा है? क्या आप उस पानी के साथ कुछ कर सकते हैं? कुछ भी नहीं। सामने साफ पानी बह रहा है, साथ में सूखी-मृत पत्तियां और टहनियां बह रही हैं। कोई मरा जानवर भी सामने से बहता जा रहा है। आप सब कुछ देखते हैं - पानी की गति और निर्मलता, लहरों का वेग, उसका भरापन। आप सब कुछ देखते हैं और पानी को बहने देते हैं। आप उस बारे में कुछ भी नहीं कर सकते। ठीक उसी तरह आज मैं जो बातचीत करने जा रहा हूं उसे सुनिए।

व्यवस्था के बिना, तरतीब लाए बिना स्वतंत्रता हो ही नहीं सकती। दोनों साथ-साथ चलते हैं। अगर आपमें व्यवस्था नहीं है तो स्वतंत्रता भी नहीं हो सकती। दोनों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। अगर आप कहते हैं कि मेरा जो मन होगा वह करूंगा, जब मन होगा खाना खाने जाऊंगा, जब मन होगा क्लास में जाऊंगा, तब आप अव्यवस्था, बदइंतजामी ले आएंगे। दूसरे लोग क्या चाहते हैं, आपको इसका खयाल रखना होगा, चीजें ठीक-ठाक, सरलता से चलें, इसके लिए आपको समय पर आना होगा - अगर आज सुबह मैं दस मिनट की देरी से आता तो आपको इंतजार करना पड़ता। इसलिए मेरे लिए इस बात का खयाल रखना ज़रूरी है। दूसरे लोगों के बारे में मुझे विचारशील होना होगा। मुझे विनम्र होना होगा, दूसरों का भी ध्यान रखना होगा, उनके बारे में भी सोचना होगा। जब हम खयाल रखेंगे, सोचेंगे, अपने अंदर से और बाहर से भी चौकन्ने रहेंगे, तब व्यवस्था आएगी और उस व्यवस्था के साथ स्वतंत्रता भी...

जब आपको यह बताया जाता है कि आपको क्या

करना चाहिए, क्या सोचना चाहिए, आपको आज्ञाकारी होना चाहिए, अनुकरण करना चाहिए इत्यादि तो आपको पता है इसका क्या असर होता है आप पर? आपका मन सुस्त हो जाता है, उसमें जान नहीं रहती, उसमें कुछ नया करने की ताकत नहीं रहती, उसका पैनापन चला जाता है। बाहर से अनुशासन लादने से मन जड़, बुद्धिहीन हो जाता है, आप दूसरों के अनुसार चलने लगते हैं, नकलची बन जाते हैं। लेकिन अगर आप खुद ही ध्यानपूर्वक देखते हुए, सुनते हुए, खयाल रखते हुए अपने अंदर अनुशासन लाते हैं तो उससे अपने आप व्यवस्था आती है। जहां व्यवस्था है वहां स्वतंत्रता ज़रूर होती है...

यदि आप निरीक्षण करने के लिए, सुनने के लिए, दूसरों का खयाल रखने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं, तब भी आपमें व्यवस्था नहीं हो सकती है। स्वतंत्रता और व्यवस्था की समस्या जीवन की सबसे अधिक कठिन और अहम समस्याओं में से एक है। यह बड़ी जटिल समस्या है। गणित, भूगोल या इतिहास के बजाय इस पर बहुत अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है।

अगर आप सचमुच में स्वतंत्र नहीं हैं तो आप खिल भी नहीं सकते। वास्तविक स्वतंत्रता के बिना न आपमें अच्छाई होगी न सुंदरता। पक्षी अगर स्वतंत्र नहीं है तो वह उड़ नहीं सकता। बीज अगर खिलने के लिए, धरती से बाहर निकलने के लिए स्वतंत्र नहीं है तो वह जीवित नहीं रह सकता। केवल मनुष्य को ही नहीं, मुक्ति की, स्वतंत्रता की ज़रूरत हर किसी को है। मनुष्य स्वतंत्रता से डरता है, वह स्वतंत्रता चाहता ही नहीं। पक्षी, नदियां, वृक्ष, सभी को स्वतंत्रता चाहिए। मनुष्य में भी स्वतंत्रता की मांग होनी चाहिए, आधे-अधूरे ढंग से नहीं बल्कि पूर्ण रूप से। हम क्या सोचते हैं, क्या करना चाहते हैं, यह बताने की आज़ादी

अवश्य होनी चाहिए और यह जीवन की सबसे महत्वपूर्ण चीज़ों में से एक है। क्रोध, ईर्ष्या, बर्बरता और क्रूरता से सचमुच आज़ाद होना, अपने भीतर से सचमुच स्वतंत्र होना एक बहुत कठिन और जोखिम भरा काम है।

केवल चाहने से आपको आज़ादी नहीं मिल जाएगी। “मुझे जो पसंद है वही करने के लिए मैं आज़ाद हूँ”, ऐसा आप नहीं कह सकते। क्योंकि दूसरे लोग भी हैं जो आज़ादी चाहते हैं, अपनी इच्छा के अनुसार काम करना चाहते हैं, जो कुछ वह महसूस करते हैं, ज़ाहिर करना चाहते हैं। हर कोई स्वतंत्र होना चाहता है, लेकिन साथ-ही-साथ अपने गुस्से, खूंखारपने, अपनी महत्वाकांक्षा और होड़ की भावना भी व्यक्त करना चाहता है। इसलिए हमेशा झगड़ा, संघर्ष होता है। मैं कुछ करना चाहता हूँ, आप कुछ और करना चाहते हैं, फिर हम दोनों झगड़ते हैं।

आज़ादी का मतलब यह नहीं है कि हम जो भी चाहें वह करें, क्योंकि दूसरे लोग भी हैं – मनुष्य केवल अपने हिसाब से ही, अपने सहारे ही नहीं जी सकता। साधु-संन्यासी भी जो चाहे करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं क्योंकि उन्हें भी जो चाहिए उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है, अपने भीतर लड़ाई करनी पड़ती है, मन ही मन बहसबाजी करनी पड़ती है। सचमुच में स्वतंत्र होने के लिए बहुत अधिक समझदारी की, संवेदनशीलता यानी महसूस कर पाने के ज़ब्बे की ज़रूरत होती है, समझ की ज़रूरत होती है। और यह भी बिलकुल स्पष्ट है कि प्रत्येक मनुष्य के लिए, चाहे वह किसी भी संस्कृति का हो, स्वतंत्र होना अत्यंत ज़रूरी है। तो देखा आपने, व्यवस्था के बिना स्वतंत्रता नहीं हो सकती।

क्या आपने कभी इस पर ध्यान दिया है कि हममें से ज़्यादातर लोग कितने बेढंगे हैं – अपने पहनावे में, चाल-चलन में, अपने विचारों में? जिस तरह हम काम करते हैं, उस

सबमें हम कितने बेतरतीब हैं? ऐसा क्यों है कि हम समय का ध्यान नहीं रखते और दूसरों की कोई परवाह नहीं करते? क्या है ऐसा जिससे हमारे पूरे जीवन में व्यवस्था आ सके, हमारे पहनावे में, विचारों में, बोलने व चलने के ढंग में, हमसे जो गरीब हैं उनके साथ हमारे बर्ताव में? क्या आपने कभी सोचा है? बिना किसी मजबूरी के, बिना कोई योजना बनाए वह अनूठी व्यवस्था कैसे आएगी?

व्यवस्था से मेरा क्या मतलब है, आप समझ रहे हैं न? इसका अर्थ है कि आप पर कोई दबाव नहीं डाल रहा है फिर भी आप शांत बैठे हैं, आप बिना जल्दीबाजी किये सलीके से खाना खा रहे हैं, आप आराम से लेकिन ठीक-ठीक काम कर रहे हैं, आप न केवल स्पष्ट ढंग से सोच रहे हैं बल्कि उन्मुक्त, खुले दिल के भी हैं। वह क्या है जिससे हमारी जिंदगी में यह व्यवस्था आती है? सच में यह बहुत ज़रूरी बात है और मुझे लगता है कि अगर इस व्यवस्था को लाने में शिक्षा हमारी मदद कर सके तो यह बड़े महत्त्व की बात होगी...

...क्या आपने कभी किसी फूल को बहुत ध्यान से देखा है? अपनी सारी पंखुड़ियों के साथ वह कितने अद्भुत ढंग से सुसंगत, नपा-तुला होता है; इसके बावजूद उसमें असाधारण नज़ाकत, खुशबू और खूबसूरती होती है। कुछ लोग होते हैं जो ऐसा बनने की, व्यवस्थित होने की कोशिश करते हैं और उनका जीवन चाहे बहुत सुसंगत भी बन जाए पर उनमें कोमलता, सौम्यता नहीं होती। यह कोमलता तो फूल की तरह अनायास, बिना किसी कोशिश के आती है। तो हमारी कठिनाई है कि बिना प्रयास के कैसे सुसंगत, सुस्पष्ट और व्यापक हुआ जाए।

तो समस्या क्या है? कैसे हम अपनी भावनाओं में व्यापक हों, कैसे हमारी खुली सोच हो, और फिर भी अपने

जीवन में सुस्पष्ट और व्यवस्थित हों? हममें से ज्यादातर लोग ऐसे नहीं हैं क्योंकि हम पूरी तीव्रता से कुछ भी नहीं महसूस करते, हम कोई भी काम पूरे दिल से, पूरे मन से नहीं करते। मुझे याद है एक बार मैं दो लाल गिलहरियों को खेलते देख रहा था। उनकी लंबी, घनी पूंछ थी और उनके बाल बहुत प्यारे थे। एक बड़े से पेड़ पर वे एक दूसरे का पीछा करती हुई दौड़ रही थीं। करीब दस मिनट तक मैं उन्हें देखता रहा, वे एक पल भी रुके बिना खेलती रहीं, जीना ही उनका आनंद था। लेकिन आप और मैं उस आनंद को तब तक नहीं जान सकते जब तक कि हमें चीज़ों को गहराई से महसूस करना नहीं आता...

अगर आप हर चीज़ को लेकर अत्यधिक ग्रहणशील और संवेदनशील हैं तो वह संवेदनशीलता ही आपमें व्यवस्था, सलीका ले आएगी...

विद्यार्थी : आप कहते हैं कि हममें स्वतंत्रता और व्यवस्था होनी चाहिए, लेकिन हम इस तक पहुंचें कैसे?

कृष्णमूर्ति : पहली बात तो यह है कि आपको किसी पर निर्भर नहीं होना है। आप यह उम्मीद न करें कि कोई दूसरा - यानी आपके माता-पिता या अध्यापक - आकर आपमें स्वतंत्रता और व्यवस्था ले आएंगे। आपको खुद ही इसे लाना होगा। यह पहली बात है जो आपको अच्छी तरह समझ लेनी है आप किसी से भी कुछ मांग नहीं सकते हैं, भोजन, कपड़े और घर के अलावा। आप अपने गुरुओं, भगवानों या किसी के भी आसरे नहीं रह सकते। कोई भी आपको स्वतंत्रता नहीं दे सकता, आपमें व्यवस्था नहीं ला सकता। आपको खुद ही अपने में व्यवस्था लानी होगी। इसका मतलब है कि आपको खुद ही सब कुछ ध्यान से देखना और खोजना होगा..

आपको अपने आप ही यह सब पता लगाना होगा कि अच्छे कैसे बनें, सौम्य, दयालु, दूसरों का खयाल रखने वाले कैसे हों। उस खयाल रखने से, उस देखने-समझने से ही आप व्यवस्था ला पाते हैं और इसलिए आप स्वतंत्र होते हैं। आप इसका इंतज़ार क्यों करते हैं कि कोई आकर आपको बताए कि आपको क्या करना चाहिए, कि आपको समय का पाबन्द होना चाहिए या आपको दयालु बनना चाहिए। जबकि अगर आप खुद ही कहें कि “ठीक है जब मुझे लगेगा मैं खिड़की से बाहर देखूंगा, पर जब पढ़ाई करूंगा तो किताब पर ध्यान दूंगा”, तब बिना दूसरों के बताए आप अपने आप में व्यवस्था ला रहे होते हैं...

क्या आप कभी अकेले घूमने जाते हैं? या हमेशा किसी न किसी के साथ जाते हैं? अगर कभी आप अकेले घूमने जाएं - बहुत दूर न जाएं क्योंकि अभी आप छोटे हैं - तो आपको अपने बारे में कई चीज़ों का पता चलेगा कि आप क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं, सदाचार क्या होता है, आप क्या होना चाहते हैं, यह सब कुछ। आपको यह सब जानना चाहिए। लेकिन अगर आप लगातार बात किए जा रहे हैं, हमेशा दोस्तों के साथ, लोगों के साथ ही घूम रहे हैं तो आप अपने बारे में कुछ नहीं जान सकेंगे। पेड़ के नीचे चुपचाप अकेले बैठिए, किताब साथ में लेकर नहीं। तारों को देखिए, साफ आसमान को देखिए, पक्षियों और पत्तियों की बनावट को देखिए। परछाईं को देखिए। आकाश में उड़ते पक्षी को देखिए। पेड़ के नीचे चुपचाप बैठे हुए, अपने साथ अकेले होने पर आप अपने मन को समझने लगते हैं, कि वह कैसे काम करता है। और यह उतना ही ज़रूरी है जितना कि क्लास में जाना।

विद्यार्थी : शिष्टाचार, शालीन व्यवहार क्या है?

कृष्णमूर्ति : आप जानना चाहते हैं कि शिष्टाचार क्या

है? यह आता है आदर करने से। अगर मैं आपका आदर करता हूँ तो मैं आपका खयाल रखता हूँ, आपके प्रति सौम्य होता हूँ। आदर और शिष्टाचार साथ-साथ चलते हैं। शिष्टाचार के मायने हैं आपका आचरण, आचरण का मतलब है व्यवहार और व्यवहार कहते हैं करने को। यानी, जब कोई आता है, कोई लड़का या लड़की या कोई बड़ा तो मैं उठ जाता हूँ, इसलिए नहीं कि वह बड़ा-बूढ़ा है, या गवर्नर है, या उससे मुझे कुछ मिल जाएगा, बल्कि इसलिए कि मुझमें सभी लोगों के लिए आदर की भावना होती है, चाहे वे अमीर हों या गरीब।

शिष्टाचार आपका आचरण है, यानी सही व्यवहार, और यह ज़रूरी है, दिखावे के लिए, ऊपरी तौर पर नहीं, बल्कि सचमुच विनम्र होना, सभी के लिए अच्छी भावना रखना बहुत ज़रूरी है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता? दूसरों के लिए अच्छी भावना रखने से आपमें सहज ही सबके लिए आदर रहता है, आपका आचरण अच्छा होता है, आप धीमी आवाज़ में बोलते हैं, दूसरों का लिहाज़ करते हैं। यह बहुत ज़रूरी है, क्योंकि समाज में इतने सारे लोग साथ-साथ रह रहे हैं, और अगर हर कोई गैरज़िम्मेदार हो जाए तो हमारा सारा समाज अस्त-व्यस्त हो जाएगा। अगर शिष्टाचार हमारे भीतर की गहरी आदर की भावना, प्रेम और समझ से अपने-आप निकल रहा है तो उसका बड़ा अर्थ है, महत्त्व है; वह पृथ्वी का सौंदर्य है।

यह दुख की बात है कि हम दिखावटी शिष्टाचार सीख जाते हैं। आप जरा ध्यान दीजिए कि आप अपने यहां काम करने वाले नौकर से कैसे बोलते हैं और अपने हेडमास्टर से कैसे। उस आदमी से, जिससे आपको लगता है कि कुछ मिलेगा, आप कितना अच्छा बर्ताव करते हैं, करीब-करीब उसके पैरों तले आप झुक जाते हैं। पर किसी काम करने वाले

को या किसी गरीब भिखारी को आप कुछ नहीं समझते, उसकी आप कोई परवाह नहीं करते। जबकि सच्ची भावना तभी होती है जब आप सबका, चाहे कोई गरीब हो या अमीर, आदर करते हैं। अगर आप अपने भीतर से समृद्ध हैं तो आपके अंदर सभी के लिए प्यार और दयालुता होगी। तब आप गवर्नर और काम करने वाले मजदूर को अलग-अलग निगाह से नहीं देखेंगे।

क्या आपने कभी किसी फूल को सूँघ कर देखा है? फूल इस बात की चिंता नहीं करता कि उसके पास से गुज़रने वाला अमीर है या गरीब। वह बस खुशबू बिखेरता, सुंदरता देता है बिना यह सोचे कि आप बच्चे हैं या कोई गवर्नर हैं या रसोइये हैं। अपने भीतर सौंदर्य और खुशबू को लिए वह तो बस एक फूल है।

अगर हममें भीतर की सुंदरता का वह एहसास है, हमारे अंदर आदर, प्रेम और संवेदनशीलता का भाव है, महसूस कर सकने की क्षमता है तो बिना किसी दबाव या मजबूरी के हमारा आचरण सुंदर, अच्छा और खुशी देने वाला होगा। इस अंदरूनी, स्वाभाविक आचरण के बिना तो हम बड़े छिछले, दिखावटी होंगे; वैसे ही जैसे हमने कोई अच्छा-सा कोट पहन लिया हो पर सचमुच में हम हों छिछले और खाली-खाली।

विद्यार्थी : हम कैसे संवेदनशील बनें?

कृष्णमूर्ति : उस दिन शाम को हल्की बूँदाबांदी हो रही थी। क्या आपने ध्यान दिया था? हल्की रिमझिम बारिश थी। काले, घने, पानी से भरे बादल छाए हुए थे। कुछ बादल सफेद, रौशनी से भरे हुए थे, उनके अंदर गुलाबी रंग का प्रकाश था। कुछ बादल तो पंखों की तरह तैरते जा रहे थे। बड़ा ही खूबसूरत दृश्य था। चारों तरफ सुंदरता छाई हुई थी।

अभी आप छोटे हैं। आप चीजों को जानना चाहते हैं, सीखना चाहते हैं, अभी आप कोई निर्णय नहीं ले पाते हैं पर कुछ देखना, खोजना, पूछना चाहते हैं; अगर अभी से ही आप इन सारी चीजों को नहीं देखते और महसूस करते तो फिर आप कभी ऐसा नहीं कर पाएंगे। जैसे-जैसे आप बड़े होंगे जीवन की छोटी-बड़ी बातों से आप घिर जाएंगे, जीवन कठिन होता जाएगा। तब आप शायद ही पहाड़ियों को देख पाएं, किसी सुंदर चेहरे और मुस्कान को महसूस कर पाएं।

अगर आपके अंदर स्नेह, दयालुता और कोमलता नहीं होगी तो जीवन नीरस, कठोर और कुरूप हो जाएगा। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं अपनी जिंदगी को राजनीति से, नौकरी और परिवार की चिंताओं से भर लेते हैं। आप भयभीत रहने लगते हैं और धीरे-धीरे अपनी सारी संवेदनशीलता खो देते हैं। तब आप न तो डूबते सूरज को, न बादलों को और न ही सितारों को देख पाते हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ आपकी बुद्धि आपके जीवन को तहस-नहस करने लगती है। मेरा यह मतलब नहीं है कि आपके पास स्पष्ट और तर्कपूर्ण बुद्धि नहीं होनी चाहिए, बल्कि वह तो होनी ही चाहिए, लेकिन इसका हावी हो जाना आपको संवेदनहीन, कठोर बना देता है और आप जीवन की बारीक, खूबसूरत चीजों को महसूस नहीं कर पाते।

एक-दो चीजों के बारे में ही नहीं बल्कि हर चीज के बारे में आपको बहुत शिद्दत से महसूस करना चाहिए। जब आप खूब गहराई से महसूस करेंगे तो आपकी जिंदगी छोटी-मोटी चीजों से ही नहीं भरी रहेगी। राजनीति, नौकरी, कैरियर, यह सब बहुत ही छोटी चीजें हैं। जब आप बहुत शिद्दत से, पूरे उत्साह और अपार जीवन-शक्ति से महसूस कर पाएंगे तब आप गहन शांति की, गहरी अंदरूनी खामोशी की अवस्था में जी सकेंगे। आपका मन बिलकुल साफ, सरल

और शक्तिशाली होगा।

विद्यार्थी : जब मैं घूमने जाता हूँ तो मेरा मन इधर-उधर दौड़ने लगता है। मैं इसे कैसे रोकूँ?

कृष्णमूर्ति : मैं और आप दोनों ही इस सवाल से कुछ सीखने जा रहे हैं। मैं आपको कुछ सिखाने नहीं जा रहा हूँ, न ही आप मेरे पीछे-पीछे चल रहे हैं। बातचीत करते-करते हम दोनों ही कुछ सीखेंगे। जब मन इधर-उधर दौड़े तो रोकने की कोशिश मत करिए। इसका कारण मैं आपको बताता हूँ। मन अनगिनत चीज़ों में उलझा हुआ है इसलिए इधर-उधर दौड़ता है। किसी एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अगर आप मन को रोकते हैं तो आप बाकी चीज़ों के सामने दीवार खड़ी कर देते हैं। यह समझदारी नहीं है।

किसी भी चीज़ को समझने के लिए आपको अपने हर विचार की शुरु से आखिर तक जांच-पड़ताल करनी होगी। जैसे कि, आप कुछ काम करने जा रहे हैं पर आपका ध्यान अपने किसी दोस्त की तरफ है। अब आपको पता लगाना होगा कि आप उस दोस्त के बारे में अभी क्यों सोच रहे हैं। इसके पीछे आपका उद्देश्य क्या है, आप क्या चाहते हैं? जब और विचार आने लगे तो उनको जरा ठहरने के लिए कहिए, जब तक कि आप पहले वाले विचार की जांच-पड़ताल न कर लें। आप उस दोस्त के बारे में क्यों सोचने लग गये, जब आप यह जानने में दिलचस्पी लेंगे तो आप न केवल इस विचार को बल्कि बाकी सब विचारों को भी ठीक-ठीक समझ सकेंगे।

जैसे, आपके मन में दस विचार आ रहे हैं और आप चाहते हैं कि मन में कोई एक ही विचार रहे। लेकिन आप कैसे जानेंगे कि उन दस विचारों में से कौन-सा विचार सही है और मन में रखने लायक है? कुछ समझ न पाने के कारण आप संघर्ष करेंगे, उलझन में रहेंगे। आप किसी एक विचार

को पकड़े रखना चाहेंगे क्योंकि यह आपको पसंद होगा या किसी ने आपको बताया होगा कि यह सही विचार है। लेकिन जैसे-जैसे और बहुत सारे विचार आते जाएंगे आपके मन में लड़ाई शुरू हो जाएगी। कोई भी मशीन हो वह घिसते-घिसते, रगड़ खाते-खाते खराब हो जाती है। इसी तरह मन भी छीजते-छीजते, संघर्ष करते-करते थक-हार जाता है। जब मन को यह बात समझ आ जाती है कि यह भीतरी झगड़ा पैदा किस तरह होता है, तब फिर यह टकराव रहता नहीं और मन थक-छीज नहीं पाता।

इसलिए हर विचार को देखिए - अच्छा या बुरा, मजेदार या बेमजा - और उसका पूरा अध्ययन कीजिए जहां तक वह विचार जाता है वहां तक। तब आपका मन लड़ाई का मैदान नहीं बनेगा। तब आप अपने आप को जानना शुरू करेंगे और आपमें इतनी विशाल सजगता मौजूद होगी जिसकी कोई सीमाएं ही नहीं हैं।

आपमें से ज्यादातर के साथ होता यह है कि अगर आपको कोई विचार बुरा लगता है तो आप कहते हैं - “यह तो बड़ा खराब विचार है, मुझे दूसरे प्रकार के विचारों पर अपना ध्यान लगाना चाहिए।” ऐसा करने से किसी भी विचार को नहीं समझा जा सकता। किसी भी विचार को समझने के लिए आपको उस विचार की पूरी जांच-पड़ताल करनी होगी भले ही वह विचार आपको बड़ा खराब लग रहा हो। और, मन अगर एकदम सतर्क, सावधान नहीं है तो प्रत्येक विचार की छानबीन करना, उसकी तह में जाना और उसके बारे में सीखना बहुत ही मुश्किल है।

डर क्या है?

कैलीफोर्निया की बात है। मैं बाहर सैर के लिए निकला था। मेरा ध्यान एक पक्षी की तरफ था। मुझे यह नहीं पता था कि मैं किधर जा रहा हूँ। तभी अचानक मुझे एक तेज सरसराहट की आवाज सुनाई दी। जहाँ से आवाज आ रही थी उस तरफ मैंने देखा और एकाएक पीछे उछल गया। सामने एक बड़ा रैटल सांप था। आपको पता है यह सांप बड़ा जहरीला होता है। पर इसे 'जेंटलमैन स्नेक' कहा जाता है क्योंकि हमला करने से पहले यह आपको सावधान कर देता है। कोबरा या बाकी सांपों की तरह यह अचानक वार नहीं करता। यह रैटल काफी बड़ा और मोटा था। मैं उससे कुछ फुट की दूरी पर था। हम एक दूसरे को देख रहे थे। उसकी त्वचा पर बनी आकृतियाँ, बड़ा-सा सिर, उसकी अपलक आंखें साफ-साफ दिखाई दे रही थीं।

आपको तो पता ही होगा कि सांप की पलकें नहीं होतीं। उसकी काली जीभ बाहर आ-जा रही थी। कुछ देर तक हम एक दूसरे को ताकते रहे। फिर वह पीछे हटने लगा। मैं उसकी तरफ बढ़ा। वह फिर कुंडली मार कर काटने के लिए तैयार हो गया। करीब आधे घंटे तक यह खेल चलता रहा। तब तक वह कुछ थक-सा गया और उसे कुछ सूझ नहीं रहा था कि आगे क्या करे। आखिरकार वह फिर पीछे हटने लगा, पर अपना सिर व पूंछ मेरी ओर किए हुए, ताकि मेरे और नज़दीक आने पर वह तुरंत हमला बोल सके। इसके बाद झाड़ियों में वह चुपचाप गायब हो गया।

इसी तरह आप अपने भीतर उभरते हुए हरएक डर को देखिए। चाहे यह सांप का डर हो, या माता-पिता का, या अपने से बड़े किसी लड़के या अपने टीचर का। डर चाहे जैसा भी हो, उससे भागिए नहीं, उसे ध्यान से देखिए, उस

पर सवाल उठाइए और पता लगाइए कि वह क्या है। अपने डर को देखिए, उससे सीखिए।

आपको डर कब लगता है? आप यह सोचकर डरा करते हैं कि लोग आपके बारे में क्या कहेंगे या आपके माता-पिता आपको क्या कहेंगे; आप डरते हैं कि कहीं मेरी बुराई तो नहीं की जाएगी या मुझे सजा तो नहीं मिलेगी या कहीं मैं फेल तो नहीं हो जाऊंगा। टीचर से जब आपको डांट पड़ती है या अपनी क्लास में या स्कूल में या आपके आसपास के माहौल में लोग आपको कुछ समझते नहीं, तब डर आपके भीतर धीरे-धीरे बैठता जाता है। क्या ऐसा नहीं होता?

बड़ों के पास इतनी ताकत है कि आपको सज़ा दे सकते हैं, दूर हटा सकते हैं या आपको अपने ही कमरे में बंद कर सकते हैं। इस तरह स्कूल में, घर पर, हमें भय के माहौल में बड़ा किया जाता है। हमारी ज़िन्दगी भय के सांचे में ढली होती है। बचपन से लेकर अंतिम सांस लेने तक हम डर में जीते हैं। और आपको पता है डर का क्या नतीजा होता है? कभी आपने अपने को डर की हालत में देखा है? कैसे आपका पेट तन जाता है, कैसे आपका पसीना छूटने लगता है, और नींद में डरावने सपने आने लगते हैं, यह सब देखा है न आपने?

क्या आपको उन लोगों के साथ रहना पसंद है जिनसे आप डरते हैं? नहीं न? कैसी अजीब बात है कि डर के साथ ही हम स्कूल जाते हैं, कॉलेज जाते हैं और फिर कॉलेज छोड़ने के बाद उस शानदार, विशाल और अत्यंत गहरी सरिता से मिलते हैं जिसे हम जीवन कहते हैं! इसलिए मुझे लगता है कि डर से बाहर निकालना शिक्षा का सबसे पहला और ज़रूरी काम है। क्योंकि डर हमारे दिमाग को जड़ बना

देता है, हमारी सोचने-समझने की ताकत को खत्म कर देता है। डर हमें अंधेरे में कैद कर देता है, और जब तक हमारे अंदर डर है, हम कोई नया संसार नहीं बना सकेंगे।

मुझे लगता है कि डर की एक वजह है तुलना। आपको पता है 'तुलना' किसे कहते हैं? किसी होशियार लड़के से या किसी और से जब आपकी तुलना की जाती है तब डर शुरू हो जाता है। हमारा पूरा समाज तुलना पर टिका है, क्या ऐसा नहीं है? हम सोचते हैं कि आगे बढ़ने के लिए तुलना ज़रूरी है। मैं अपनी तुलना किसी राजनेता से करता हूँ और कहने लगता हूँ - "मैं उसे हराकर रहूँगा, उससे आगे निकल जाऊँगा।" आपकी क्लास में कोई लड़का है जो शायद थोड़ा होशियार है, और टीचर आपकी तुलना उससे करने लगते हैं तब आपको कैसा लगता है? आपने इस पर कभी ध्यान दिया है जब आपकी तुलना किसी और से की जाती है तो आपको कैसा महसूस होता है ? टीचर आपसे कहते हैं - 'उस लड़के या लड़की जैसे तेज़ बनो।'

तो आपको उस दूसरे लड़के या लड़की की तरह मेहनती और अध्ययनशील बनाने के लिए टीचर आपको ग्रेड और नम्बर देते हैं ताकि आप आगे बढ़ने के लिए जूझते रहें, संघर्ष और होड़ में लगे रहें। आपको उस होशियार बच्चे से जलन होने लगती है। इस तरह दूसरों से तुलना करने पर ईर्ष्या, जलन पैदा होती है और ईर्ष्या ही डर की शुरुआत है... जब आप किसी दूसरे से अपनी तुलना करते हैं तो वह दूसरा आपसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। क्या ऐसा नहीं होता? आप यह भूल जाते हैं कि आप भी एक व्यक्ति हैं, आपकी अपनी कुछ क्षमताएं हैं, कठिनाइयां व समस्याएं हैं, आपके अपने कुछ रुझान हैं; आपका सारा ध्यान उस दूसरे पर जिससे आप अपनी तुलना कर रहे हैं केंद्रित हो जाता है और आप उसके जैसा बनने के संघर्ष में खुद को ही भुला

देते हैं। यह संघर्ष ही ईर्ष्या, भय उत्पन्न करता है...

विद्यार्थी : भय पर आधारित समाज में हम बड़े हुए हैं, फिर उससे छुटकारा पाना कैसे संभव होगा?

कृष्णमूर्ति : क्या आपको यह एहसास है कि आप डरे हुए हैं? अगर ऐसा है तो आप इससे कैसे बाहर निकलेंगे? मुझे और आपको यह खोजना है, आइए मिलकर सोचें।

जब आपको डर लगता है तब आप सच में करते क्या हैं? क्या आप इधर-उधर भाग नहीं जाते? आप कोई किताब उठा लेते हैं, या सैर करने निकल जाते हैं, आप किसी भी तरह उसे भुलाने की कोशिश करते हैं। अपने माता-पिता से, समाज से आप डरते हैं। आपको उस डर का पता है पर यह नहीं मालूम कि उसे कैसे खत्म किया जाए।

आप सच में इतने डरे होते हैं कि उस ओर देखना भी नहीं चाहते, इसलिए किसी-न-किसी बहाने इससे निकल भागते हैं। यही कारण है कि आप पढ़ने और परीक्षाएं पास करने में लगे रहते हैं और तब फिर वह वक्त आता है जब इसका सामना करना आप और नहीं टाल सकते और कुछ करना ज़रूरी हो जाता है।

अगर आप अपने सामने आई किसी भी समस्या से भागते रहेंगे तो आप उससे निपट नहीं पाएंगे। आपको उसका सामना तो करना ही होगा। क्या अब आप अपने अंदर समाये डर को पास से देखेंगे? अगर आप किसी पक्षी का अध्ययन करना चाहते हैं, उसके बारे में जानना चाहते हैं तो आपको उसके पंखों को, पैरों को, चोंच वगैरह को गौर से, करीब से जाकर देखना होगा। इसी तरह अगर आप डरे हुए हैं तो अपने डर को भी बहुत पास से आपको देखना होगा। उससे दूर भाग कर तो आप उस डर को और बढ़ाते जाते हैं।

विद्यार्थी : क्या आप बताएंगे कि डर से मैं कैसे बाहर निकलूं?

कृष्णमूर्ति : डर से कैसे बाहर निकला जाए? आपको पता है आप किस चीज़ से डरे हुए हैं? ध्यान से सुनिए। डर अपने आप यूँ ही नहीं लगता, वह हमेशा किसी-न-किसी वजह से लगता है। डर सांप से लग सकता है; आपके माता-पिता, टीचर क्या कहेंगे, इससे आपको डर लग सकता है, या फिर मरने के खयाल से। डर कभी अकेला नहीं आता, सदा किसी-न-किसी वजह के साथ आता है। आप समझ रहे हैं?

डर अपने आप में कुछ नहीं है, वह हमेशा किसी दूसरी चीज़ के संबंध में, उसके सहारे, उसकी वजह से हुआ करता है। क्या आपको इसका अंदाज़ा है, इसका पता है कि आपके अंदर जब कभी डर उठता है वह किसी-न-किसी चीज़ के बारे में होता है? देखिए, क्या आप अपने माता-पिता से, अपने टीचरों से डरते नहीं हैं? मुझे उम्मीद है कि नहीं। पर शायद आप डरते तो हैं। क्या आपको परीक्षा में फेल होने का डर नहीं लगा रहता? लोग आपके बारे में क्या सोचेंगे, आपको अच्छा और महान आदमी नहीं मानेंगे, इन सारी बातों का आपको डर नहीं रहता? क्या आपको नहीं पता कि आपको किन-किन बातों से डर लगता है?...

तो सबसे पहले आपको यह जानना चाहिए कि आपको किस चीज़ का डर है। मैं धीरे-धीरे आपको समझाऊंगा। फिर आपको, आपके मन को यह पता लगाना होगा कि यह डर क्या है। क्या यह डर मन से अलग है? क्या मन खुद ही पीछे जाकर या भविष्य में खुद को टेल कर भय पैदा नहीं कर रहा है?...

डर हमको भ्रष्ट बना देता है, बिगाड़ देता है। डर से

आज़ाद होने के लिए पहले आपको यह समझ लेना होगा कि मन डर कैसे पैदा करता है। डर नाम की कोई चीज़ नहीं है सिवा उसके जो मन खुद ही बना करता है। मन आसरा चाहता है, सुरक्षा चाहता है। खुद को बचाए रखने की ज़बरदस्त चाहत के तमाम ढंग मन के पास हैं। जब तक ये सारी चीज़ें हैं, डर भी रहेगा। बड़ा बनने की चाह को, किसी को बड़ा मान लेने को - कि वह जो कह रहा है वही सच है - समझना बहुत ज़रूरी है। इन दोनों ही बातों में डर छिपा हुआ है, जो बहुत ही विनाशकारी है।

एक बच्चा : जब मैं पास जाता हूँ तो पक्षी उड़ क्यों जाते हैं?

कृष्णमूर्ति : कितना अच्छा होता अगर पास जाने पर भी पक्षी नहीं उड़ते! कितना अच्छा होता अगर आप उनको छू पाते, उनसे दोस्ती कर पाते! पर आपको तो पता ही है कि हम मनुष्य कितने क्रूर हैं। हम पक्षियों को मारते हैं, उन्हें यातना देते हैं, जाल में फंसाते हैं और पिंजड़ों में बंद कर देते हैं। जरा सोचिए, एक प्यारा सा तोता पिंजड़े में बंद है। शाम होते ही वह अपने जोड़े को पुकारता है, खुले आकाश में बाकी पक्षियों को उड़ता हुआ देखता है! इतना सब कुछ करने के बाद आप क्या सोचते हैं, कि हमारे पास जाने पर वे डरेंगे नहीं?

पर अगर आप किसी एकांत जगह पर चुपचाप बैठे हों, हिल-डुल नहीं रहे हों, एकदम शांत हों तो आप देखेंगे कि पक्षी आपके पास आने लगेंगे। वे आपके काफी पास मंडराने लगेंगे और उनकी सतर्क हलचल को, उनके नाजुक पंजों को, उनके पंखों की अद्भुत शक्ति व सुंदरता को आप देख सकेंगे। लेकिन यह करने के लिए आपके पास बहुत सारा धीरज होना चाहिए, जिसका मतलब है कि आपके अंदर ढेर सारा प्यार हो और कोई भय नहीं हो। ऐसा लगता है कि

पशु-पक्षी हमारे अंदर के भय को भांप लेते हैं और तब वे डरकर दूर हट जाते हैं। इसलिए खुद को समझना, खुद को जानना बहुत ज़रूरी है।

आप किसी पेड़ के नीचे एकदम स्थिर होकर, बिना हिले-डुले बैठना शुरू करें। सिर्फ दो-तीन मिनट के लिए नहीं क्योंकि पक्षी इतनी जल्दी अपकी मौजूदगी के आदी नहीं होंगे। रोजाना आप उसी पेड़ के नीचे शांत होकर बैठते रहें। और जल्दी ही आपको यह दिखना शुरू हो जाएगा कि आपके आसपास की हर चीज़ सजीव है, जीवन से भरी है। धूप में चमकती घास की पत्तियां आपको दिखेंगी, छोटी-छोटी चिड़ियों की कभी न खत्म होती हलचल आपको नजर आएगी; या फिर किसी सांप की अद्भुत छटा ही आपको नज़र आ जाए या कोई चील ही आसमान में ऊंची उड़ती हुई, बिना पंख हिलाए-डुलाए हवा में मौज से तैरती हुई दिख जाए। लेकिन यह सब देखने के लिए, इसके उल्लास को महसूस करने के लिए आपके भीतर सच में ही खामोशी का होना ज़रूरी है।

कृष्णमूर्ति फॉर द यंग सीरीज़ से संकलित
अनुवाद : मुकेश

सृजन का संसार

उस साल सर्दियों में कृष्णमूर्ति ने मेरी जिम्बालिस्ट को अपने साथ भारत नहीं आने दिया क्योंकि पिछले साल भारत में वह बीमार पड़ गयी थीं। कृष्णमूर्ति इतने कमजोर हो गये थे कि मेरी को शक था कि वह फिर उन्हें देख पाएगी या नहीं। 'यदि मेरी मृत्यु होने वाली होगी तो मैं आपको तुरंत फोन कर दूंगा,' कृष्णमूर्ति ने उनको यकीन दिलाया। 'मैं अचानक नहीं मरूंगा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है, मेरा हृदय वगैरह सब ठीक है। यह सारा कुछ कोई और निर्धारित करता है। मैं उसके बारे में बात नहीं कर सकता। मुझे इसकी इजाजत नहीं है, आप समझ रही हैं न? यह अत्यधिक गहन है। ऐसी चीजें हैं जिन्हें आप नहीं जानतीं। वे विराट हैं, और मैं कुछ नहीं बता सकता। ऐसा मस्तिष्क मिलना दुर्लभ है और जब तक देह बरदाश्त कर सकती है, जब तक कहीं से यह आवाज न आ जाए कि बस, काफी है, उसे चलते जाना है।'

19

अक्टूबर को मार्क एडवर्ड्स ने जब कृष्णमूर्ति का फोटो खींचा तो उसने उन्हें असाधारण रूप से तंदुरुस्त पाया। किंतु नयी दिल्ली में जो हफ्ता कृष्णमूर्ति ने बिताया उस दौरान वह बहुत ही कम सोए और उन्होंने शायद ही कुछ खाया। इसलिए 2 नवंबर को जब वह राजघाट पहुंचे तो उनका इंतज़ार कर रहे डॉ. परचुरे ने उनको चिंताजनक हद तक कमजोर पाया। उस दिन से डॉक्टर परचुरे ने कृष्णमूर्ति के निधन होने तक उनका साथ नहीं छोड़ा और हर दिन के उनके स्वास्थ्य का ब्यौरा वह रखते रहे।

राजघाट में रहते हुए कृष्णमूर्ति ने भारत में अपने मुख्य कार्यों में से एक को अंजाम दिया, वह कार्य था राजघाट स्कूल के लिए एक नये प्रमुख की खोज (उस पद के लिए 'रेक्टर' नाम इस्तेमाल होता था)। यह नये व्यक्ति थे राधा बर्नियर के भतीजे और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्राध्यापक डॉ. पी. कृष्णा। अपने कुलपति की स्वीकृति से प्राध्यापक का पद छोड़ने और फरवरी

में राजघाट में अपने नये काम को संभालने के लिए वह राजी हो गए।

मेरी जिम्बालिस्ट का कृष्णमूर्ति के साथ जब भारत आना नहीं होता था तो कृष्णमूर्ति उनको दैनंदिन पत्र लिखा करते थे। लेकिन इस बार वह लगभग प्रत्येक दिन कहीं लंबे पत्र कैसेट में बोलकर टेप कराते थे और डाक से भेज देते थे। ऐसा वह हाथ कांपने की वजह से करते थे। 9 नवंबर को राजघाट से उन्होंने मेरी को बताया कि उनका रक्तचाप काफी कम हो गया था और उनके पैर इतने कमजोर पड़ गये थे कि चलना मुश्किल हो गया था। एक दिन पहले वह पैर न उठा पाने के कारण कुछ सीढ़ियां गिर पड़े थे। डॉ. परचुरे ने उनको कुछ व्यायाम बताये थे और वह रोज तेल से उनके पैरों की मालिश कर रहे थे, उन्हें भरोसा था कि उनके पैरों में जल्दी ही ताकत आ जाएगी। लोगों के साथ खाना खाना उनके लिए नामुमकिन हो गया था और वह अपना सारा खाना बिस्तर में ही ले रहे थे। लोग उनसे मिलने सारा समय उनके कमरे में आते थे और वहीं वह परिचर्चाएं करते थे।

पुपुल जयकर, नंदिनी मेहता, राधिका हर्जबर्गर, सुनंदा और पामा पटवर्धन, सभी लोग राजघाट में थे। 11 नवंबर तक उनके पैरों की हालत अच्छी हो गयी और वह अपने भीतर काफी ताकत महसूस करने लगे। छे बजकर पंद्रह मिनट के करीब जब सूर्योदय हुआ तो नदी के सौंदर्य के बारे में वह कुछ बोले। गोअर विडाल की 'लिंगन' वह पढ़ रहे थे जिसके बारे में उन्होंने कहा कि यह वाकई शानदार है।

कमजोरी के बावजूद कृष्णमूर्ति ने राजघाट में दो सार्वजनिक वार्ताएं दीं तथा भारतीय ट्रस्टियों एवं जगन्नाथ उपाध्याय सहित कुछ बौद्ध विद्वानों के साथ परिचर्चाओं में हिस्सा लिया। भारत की सरकार ने जाने-माने फिल्म निर्माता जी. अरविंदन को कृष्णमूर्ति के जीवन पर एक पूरी फिल्म बनाने के लिए अनुदान दिया था। 'द सीअर हू वॉक्स अलोन' नाम की इस फिल्म का निर्माण एक साल पहले शुरू हो गया था और इसके आखिरी दृश्यों का फिल्मांकन राजघाट में कृष्णमूर्ति के आखिरी आगमन पर हुआ।

नवंबर के आखिर में कृष्णमूर्ति जब ऋषिवैली पहुंचे तो डॉ. परचुरे के अनुसार शाम की सैरों में उनकी दुर्बलता का पता चला जब वह दाहिनी दरफ इतने झुकते चले गए कि गिर सकते थे। उन पर सर्दी का भी बुरा असर, संभवतः वजन घट जाने के कारण। मेरी को उन्होंने बताया कि रात में कंबल आदि और गर्म पानी की बोतल भी उनको ठंड से नहीं बचा पा रहे हैं; सुबह का उनका तापमान भी 48⁰ से. तक जा रहा था। अपना भोजन वह अकेले अपने कमरे में करते थे, जैसा कि उन्होंने राजघाट में किया था, और ऐसा ही वह मद्रास में करने की सोच रहे थे। वह कितने बीमार थे, इसका उन्हें अभी भी पता नहीं था। क्योंकि 4 दिसंबर को उन्होंने मेरी को बताया कि 20 जनवरी को वह मद्रास से बम्बई जाएंगे, 12 फरवरी को बम्बई से लंदन के लिए रवाना होंगे और चार दिन ब्रॉकवुड में बिताने के बाद वह लॉस एंजेलिस की उड़ान भरेंगे और 17 फरवरी को उनसे मिलेंगे। (वास्तव में यह वह दिन था जब उनकी मृत्यु होने वाली थी।) 11 दिसंबर को उन्होंने कहा कि वह पहले से काफी अधिक ताकत महसूस कर रहे हैं और उनके पैर अब थोड़े ज्यादा मजबूत हो रहे हैं।

दिसंबर के मध्य में सभी कृष्णमूर्ति विद्यालयों के शिक्षक ऋषिवैली में एक सम्मेलन के लिए जुटे। इंग्लैंड से आने वालों में स्कॉट फोर्ब्स भी थे। कृष्णमूर्ति की शारीरिक दशा इतनी खराब देखकर उन्हें बड़ा धक्का लगा। बाद में उन्होंने लिखा था:

“ऋषिवैली के लोग उनकी दुर्बलता को लेकर बेहद सचेत थे तथा विद्यार्थी एवं शिक्षकगण उनके साथ बड़ी नम्रता व सावधानी से पेश आ रहे थे। हवा में पूर्वाभास का भाव था। लोग इसके बारे में खुलकर बात नहीं कर रहे थे - कम से कम मुझसे तो नहीं - लेकिन इस बात के साफ इशारे दिखाई दे रहे थे कि लोगों को यह उम्मीद नहीं थी कि कृष्णमूर्ति अब दोबारा कभी ऋषिवैली आ सकेंगे। कृष्णमूर्ति अवश्य ही लोगों को इस बात के लिए तैयार करते रहे होंगे क्योंकि धीरे-धीरे यह बात स्वीकार कर ली गयी थी कि अब वह शायद कभी भारत नहीं लौटेंगे।

राधिका हर व्यक्ति के लिए मेजबान की भूमिका अदा कर रही थी, कान्फ्रेंस को भी चला रही थी, कृष्णजी की देखभाल का जतन भी कर रही थी और स्कूल में अपनी जिम्मेदारियों को भी निभा रही थी। मुझे याद है कि उस समय मुझे कई बार यह खयाल आया था कि वह कितने अच्छे ढंग से यह सब कर पा रही थी और एक बहुत ही कठिन परिस्थिति को जितना मुमकिन था उतने बेहतर तरीके से संभाल रही थी।”

सभी को आश्चर्य में डालते हुए कृष्णमूर्ति ने शिक्षक सम्मेलन में हिस्सा लिया और तीन बार वह बोले। एक अंग्रेजी शिक्षक के अनुसार उनके आने से पूरे सम्मेलन को एक भिन्न धरातल और भव्यता मिल गयी। सम्मेलन के आखिरी समय में कृष्णमूर्ति ने प्रश्न किया कि क्या कोई ऐसी प्रज्ञा है जो जानकारी से उत्पन्न न हो और इसलिए स्वार्थ से मुक्त हो? मन (‘माइंड’) और मस्तिष्क (‘ब्रेन’) के बीच उन्होंने भेद किया, मस्तिष्क को उन्होंने भौतिक यंत्र बताया जो बुनियादी रूप से विचार का आधार है। मन को उन्होंने इससे बिलकुल ही भिन्न बतलाया जिसकी समयरूपी विचार में कोई भूमिका नहीं है। उन्होंने पूछा, ‘क्या अच्छाई में समय की भूमिका है?’ उनका सुझाव था कि जैसा मानवीय अनुभव में देखने में आता है उसके ठीक उलट तथ्य यह है कि शुभ का, अच्छे का अशुभ से, बुरे से कोई संबंध नहीं है, न तो उसकी प्रतिक्रिया के रूप में, न ही किसी प्रारंभिक अवस्था के तौर पर। सम्मेलन में जब पाठ्यक्रम जैसे बिंदुओं पर चर्चा हो रही थी, कृष्णमूर्ति सम्मेलन को उस बिंदु पर लौटा ले आए जो उनकी दृष्टि में विद्यालयों का मूल उद्देश्य था - अर्थात्, कैसे एक नये मस्तिष्क का जन्म हो, तथा अच्छाई में प्रस्फुटित होने के मायने क्या हैं।

ऋषिवैली में उन्होंने अकेले में बच्चों से भी बातचीत की। जैसा कि 1924 में पर्जिन में उन्होंने हमारे साथ किया था उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जीवन में सबसे भयानक चीज़ दोयम दर्जे के औसत आदमी के रूप में बड़ा होना है समाज में ऊंचे से ऊंचा स्थान पाकर भी आप, मीडिऑकर, औसत दर्जे के बने रह सकते हैं। इस बात का संबंध ‘होने’ (‘बीइंग’) से है न कि कुछ हासिल कर लेने से।

ऋषिवैली में एक छोटा सा कृष्णमूर्ति अध्ययन केंद्र ('स्टडी सेंटर') बनाने के बारे में राधिका हर्जबर्गर और स्कॉट के बीच कुछ बातचीत हुई। ऐसे ही अध्ययन केंद्र राजघाट में और हिमालय में देहरादून के करीब उत्तरकाशी में भी बनने थे। उत्तरकाशी की जमीन भारतीय फाउंडेशन को भेंट में मिली थी जहां पर जाड़ों में जाना मुश्किल था। इन सभी जगहों को फ्रीड्रिख ग्रोहे से आर्थिक मदद मिल रही थी।

लंबी चोंच और ऊंची कलगी वाली एक चिड़िया (हूपू) कृष्णमूर्ति के कमरे की खिड़की की दहलीज पर बैठ जाया करती थी जब यह सारी चर्चाएं चल रही होती थीं। अंदर आने के लिए वह चिड़िया शीशे पर चोंच मारा करती थी। कृष्णमूर्ति के पिछले कई दौरों में वह ऐसा कर चुकी थी जबकि उन्होंने उसे कभी कुछ खिलाया नहीं था। उसके भीतर आने की इच्छा का कोई कारण नजर नहीं आता था फिर भी वह तकरीबन हमेशा वहां बैठी रहती थी। कृष्णमूर्ति उससे बात करते थे और उनका कहना था कि वह उनकी ध्वनि को पसंद करती है। कृष्णमूर्ति की इस आखिरी यात्रा में भी वह हमेशा की तरह शीशे पर चोंच मारती हुई बैठी थी। इस बातचीत की कैसेट को सुनने पर चिड़िया की आवाज को साफ-साफ सुना जा सकता है।

मद्रास जाने के दो दिन पहले, यानी 19 दिसंबर को कृष्णमूर्ति मेरी को कैसेट में बता रहे थे :

“मेरा वजन बहुत अधिक घट रहा है। मैं बहुत जल्दी थक जा रहा हूं। जनवरी के बीच में मैं यह बता पाऊंगा कि मैं बम्बई जा रहा हूं या नहीं, या सिंगापुर एअरलाइन से मद्रास से सिंगापुर, और सिंगापुर से लॉस एंजेलिस। हीथ्रो से लंदन और फिर पांच दिन के बाद लॉस एंजेलिस के लिए दूसरा हवाई जहाज पकड़ने के बजाय मुझे यह पसंद आ रहा है... यह कैसे होगा देखा जाएगा। वास्तविकता यह है कि मैं काफी ठीक हूं, हृदय की कोई समस्या नहीं है, न सिर की; मेरा मस्तिष्क ठीक है और बहुत अच्छे ढंग से काम कर रहा है, लिवर और बाकी चीजें भी ठीक हैं; लेकिन मेरा वजन किसी तरह बढ़ता नजर नहीं आ रहा है। मैं अपना वजन खो रहा

हूँ इसलिए यही समझदारी होगी कि सिंगापुर जाया जाए और वहां से सीधे पैसिफिक के ऊपर से...पर जैसे-जैसे मैं रोज तुमको लिखता, बोलता रहूंगा तुम्हें पता चलता जाएगा। देखेंगे कि क्या हो सकता है। मैं जितनी कम यात्रा करूं उतना अच्छा है; अब हर चीज़ मुझे थका देती है।”

इस कैसेट की रिकॉर्डिंग में कहीं-कहीं पर व्यवधान है क्योंकि कृष्णमूर्ति बीच-बीच में उस चिड़िया (‘हूपू’) से बात कर रहे हैं : ‘आओ, आओ, अंदर आ जाओ। मैं यहाँ हूँ। आओ अच्छी बच्ची, मैं इस तरफ हूँ। यहाँ आकर बैठ जाओ। (माफ करना, मैं चिड़िया से बात कर रहा हूँ।) तुम्हारी बड़ी तेज आंखें हैं, हैं न!’

21 दिसंबर तक उन्होंने सिंगापुर होते हुए लॉस एंजेलिस जाने का निर्णय ले लिया था, जैसा कि उन्होंने मेरी को बताया, और अपनी बम्बई वार्ताएं रद्द कर दी थीं। मेरी से उन्होंने कहा, ‘मैं अब और वजन नहीं खो सकता - यह काफी कम हो गया है और इससे ज्यादा वजन घटने पर मैं इतना कमजोर हो जाऊंगा कि चल भी नहीं सकूंगा। तब कुछ भी नहीं हो सकेगा।’

स्कॉट फोर्ब्स को, बाकी शिक्षकों के साथ यूरोप लौटने के बजाय, उन्होंने अपने साथ ओहाय चलने के लिए कह दिया था। स्कॉट को अपनी और डॉ. परचुरे की टिकट बदल कर सिंगापुर एअरलाइन की टिकट लेने और खुद उनके लिए एक टिकट का इंतजाम करने के लिए वह बोल चुके थे। सौभाग्य से स्कॉट के पास अमेरिकन एक्सप्रेस कार्ड था जिससे यह सारा कुछ संभव था। यूरोप की सर्दी वह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। मद्रास की वार्ताओं के तुरंत बाद भारतीय ट्रस्टियों की बैठक खत्म होते ही वह निकल जाना चाहते थे।

मद्रास पहुंचते ही कृष्णमूर्ति को एक प्रसिद्ध डॉक्टर को दिखाने का इंतजाम डॉ. परचुरे ने कर दिया था। उनका वजन घटकर अब 43.9 किलो रह गया था और उन्हें बुखार भी था। किसी सांघातिक बीमारी का शक होने पर डॉक्टर ने कुछ परीक्षण करने चाहे किंतु कृष्णमूर्ति ने इससे इनकार कर दिया क्योंकि वह

वार्ताओं के दौरान कोई व्यवधान नहीं चाहते थे। वसंत विहार के बगीचे में सांध्यवेला में उन्होंने चार के बजाए तीन वार्ताएं की; और स्कॉट को उन्होंने अपने जाने की तिथि 17 जनवरी से घटाकर 10 जनवरी करने के लिए कहा। ('वह जल्दी से जल्दी ओहाय पहुंच जाना चाहते थे ताकि डॉ. दोइस्च के इलाज के लिए खुद को सौंप सकें;' डॉ. परचुरे ने नोट किया।) बीमार होते हुए भी वह रोजाना देर शाम को राधा बर्नियर के घर से समुद्रतट पर टहलने जाते थे।

जनवरी के प्रारंभ में कृष्णमूर्ति के अलावा वसंत विहार में रह रहे सभी लोग अरविंदन की फिल्म 'द सीअर हू वॉक्स अलोन' का प्रीमियर देखने के लिए गए। यह फिल्म आश्चर्यजनक रूप से कम समय में पूरी हो गयी थी। फिल्म में कुछ खूबसूरत दृश्य हैं लेकिन दुर्भाग्य से कृष्णमूर्ति को जहां-जहां चलते हुए और बोलते हुए दिखाया गया है वे जगहें कौन सी हैं यह नहीं बताया गया है।

4 जनवरी 1986 को अपनी सबसे आखिरी वार्ता को कृष्णमूर्ति ने इन शब्दों के साथ विराम दिया :

“सृजन सबसे पवित्र है। सर्वाधिक पावन है वह जीवन में, और यदि आपने अपने जीवन को बेतरतीब कर रखा है तो उसे बदलें। कल नहीं आज ही बदलें। यदि आप अनिश्चय से घिरे हैं तो पता लगाएं कि ऐसा क्यों है, और निश्चित हों। यदि आप स्पष्ट, साफ ढंग से नहीं सोच पाते हैं तो स्पष्ट, तर्कसंगत ढंग से सोचें। जब तक यह, सारी जमीन तैयार नहीं हो जाती है आप सृजन के संसार में प्रवेश नहीं कर सकते हैं।”

अब समाप्त होता है। ('इट एंड्स' - ये शब्द इतने धीमे बोले गए हैं कि सुनाई नहीं पड़ते। श्रोताओं ने इन्हें नहीं सुना होगा, इसे केवल कैसेट पर सुना जा सकता है।)

फिर, एक लंबे अंतराल के बाद वह बोले : 'यह अंतिम वार्ता है। क्या आप कुछ क्षणों के लिए एक साथ मौन बैठना चाहेंगे? ठीक है सर, आइए कुछ क्षण शांत होकर बैठें।'

वार्ताओं के बाद भारतीय फाउंडेशन की बैठक में कृष्णमूर्ति ने आग्रह किया कि जिन मकानों में वह ठहरते रहे हैं वे तीर्थस्थल

नहीं बनने चाहिए और उनके नाम के साथ कोई संप्रदाय खड़ा नहीं होना चाहिए। फाउंडेशन की नियमावली में यह स्मरण-नोट जोड़ने के लिए उन्होंने कहा :

“किसी भी परिस्थिति में फाउंडेशन या इसके अंतर्गत कोई भी संस्थान या इसका कोई भी सदस्य स्वयं को कृष्णमूर्ति शिक्षा के अधिकारी, अथॉरिटी के रूप में अधिष्ठित नहीं होगा। कृष्णमूर्ति की घोषणा के अनुरूप कोई भी कहीं भी स्वयं को उनका या उनकी शिक्षाओं का प्राधिकारी नहीं मानेगा।”

- मेरी लट्यन्स, लाइफ एंड डेथ ऑफ कृष्णमूर्ति अध्याय 21
अनुवाद : मुकेश

कॉपीराइट सूचना

जे. कृष्णमूर्ति के उद्धरण अंतर्राष्ट्रीय कॉपीराइट नियम के अंतर्गत संरक्षित हैं तथा सर्वाधिकारी की लिखित पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रस्तुत नहीं किये जा सकते हैं। सन् 1968 के पूर्व की कृष्णमूर्ति की रचनाओं का कॉपीराइट कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ऑफ अमेरिका, ओहाय, कैलीफोर्निया का है। सन् 1968 के बाद की रचनाओं का कॉपीराइट कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट, ब्रॉकवुड पार्क, इंग्लैंड का है।

राजघाट संवाद

कृष्णमूर्ति की जन्मतिथि 11 मई एवं राजघाट के हीरक जयंती वर्ष के अवसर पर कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं को समर्पित एक नया अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्र 'राजघाट संवाद' का प्रवेशांक प्रकाशित किया गया। यह हिंदी पत्र समूचे हिंदी क्षेत्र तथा उत्तर एवं मध्य भारत में कृष्णमूर्ति की शिक्षा में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं को आपस में जोड़ने का कार्य करेगा। यह साल में दो बार, मई एवं नवम्बर माह में, प्रकाशित किया जाएगा तथा कृष्णमूर्ति की शिक्षा में रुचि रखने वाले मित्रों को निःशुल्क भेजा जाएगा। इसकी निःशुल्क प्रति मंगवाने के लिए आप अपना तथा अपने मित्रों के नाम-पते लिखकर हमें इस पते पर भेज सकते हैं : जे. कृष्णमूर्ति प्रज्ञा परिषद्, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 ईमेल : kcentrevns@gmail.com

कृष्णमूर्ति हिंदी रिट्रीट

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट में 27 से 29 सितंबर, 2009 के बीच एक विशेष अध्ययन अवकाश का आयोजन किया जा रहा है। रिट्रीट का कुल शुल्क 600 रुपये है जिसे मनीऑर्डर से या 'के.एफ.आई. स्टडी सेंटर' के नाम ड्राफ्ट बनाकर इस पते पर भेज सकते हैं : कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 ईमेल : kcentrevns@gmail.com

कृष्णमूर्ति अध्ययन स्कॉलरशिप

पिछले कुछ वर्षों से प्रदत्त बुद्ध-कृष्णमूर्ति अध्ययन स्कॉलरशिप का स्वरूप इस साल से अधिक व्यापक कर दिया गया है। यह स्कॉलरशिप विविध संदर्भों में कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के अनुसंधान हेतु है, अब यह केवल बुद्ध की शिक्षाओं से उनकी तुलना तक सीमित नहीं होगी। वर्ष 2009 के लिए आवेदन आमंत्रित हैं। संपर्क करें : सचिव, राजघाट शिक्षण संस्थान, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001

के.एफ.आई. पब्लिक गैदरिंग
कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया का वार्षिक सम्मेलन इस वर्ष राजघाट में
11 से 14 नवंबर के बीच आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन में भाग
लेने के लिए संपर्क करें : कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट,
वाराणसी 221 001 ईमेल : kcentrevns@gmail.com

मराठी गैदरिंग, सह्याद्री

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर सह्याद्री में 22 से 27 मई 2009 के बीच
मराठी भाषा में एक कृष्णमूर्ति गैदरिंग का आयोजन किया जा रहा
है। गैदरिंग में भाग लेने के लिए संपर्क करें:
कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर सह्याद्री, पोस्ट तिवई हिल्स, तालुका - खेड
(राजगुरुनगर) जिला पुणे-410 513 फोन: 02135-288772, 288348
ईमेल: kscskfi@gmail.com वेबसाइट: www.kscskfi.com

कृष्णमूर्ति अध्ययन कार्यशालाएं : 2009

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, सह्याद्री में कृष्णमूर्ति की शिक्षा के आलोक में
निम्नलिखित विषयों पर केंद्रित अध्ययन-कार्यशालाओं का आयोजन
किया जा रहा है:

What will make us change? : 11 – 17 जून

Three Arts and the Art of Living : 09 – 15 जुलाई

Our Relationship with Nature : 03 – 07 अगस्त

Creativity in Daily Living : 21 – 25 सितंबर

What is Meditation according to J. Krishnamurti? : 05 – 11 अक्टूबर

Introduction to J. Krishnamurti (Marathi Workshop) : 09 – 13 नवंबर

In the Problem is the Solution : 25 – 31 दिसंबर

कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए संपर्क करें :

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर सह्याद्री
कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, पोस्ट तिवई हिल्स,
ता. खेड -राजगुरु नगर, पुणे-410513
फोन: 02135-284278 ईमेल: kscskfi@gmail.com

हिंदी में उपलब्ध कृष्णमूर्ति की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

1. ज्ञात से मुक्ति	रु. 100.00
2. ध्यान	रु. 40.00
3. हिंसा से परे	रु. 90.00
4. गरुड़ की उड़ान	रु. 70.00
5. संस्कृति का प्रश्न	रु. 50.00
6. शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य	रु. 60.00
7. शिक्षा संवाद	रु. 75.00
8. स्कूलों के नाम पत्र	रु. 60.00
9. स्कूलों को पत्र, भाग-2	रु. 40.00
10. आमूल क्रांति की आवश्यकता	रु. 60.00
11. सुखी वही जो कुछ नहीं है	रु. 25.00
12. वार्षिक गटन वार्ताएँ	रु. 25.00
13. अंतिम वार्ताएँ	रु. 70.00
14. सत्य एक पथहीन भूमि है	रु. 10.00
15. मृत्यु और उसके बाद	रु. 40.00
16. जीवन भाष्य-1	रु. 70.00
17. जीवन भाष्य-2	रु. 70.00
18. जीवन भाष्य-3	रु. 80.00
19. ईश्वर क्या है?	रु. 125.00
20. सोच क्या है?	रु. 125.00
21. ध्यान (नया परिवर्धित संस्करण)	रु. 125.00
22. शिक्षा क्या है?	रु. 175.00
23. आपको अपने जीवन में क्या करना है?	रु. 175.00
24. प्रथम और अंतिम मुक्ति (पेपरबैक)	रु. 175.00
25. प्रथम और अंतिम मुक्ति (हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी संस्करण)	रु. 500.00

जे. कृष्णमूर्ति प्रज्ञा परिषद्

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी-221001

ईमेल: kcentrevns@gmail.com फोन: 0542-2441289, 2440453

'कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. पी. कृष्णा द्वारा सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस, एस-1/208 के-1 नयी बस्ती, पांडेयपुर, वाराणसी 221 002 से मुद्रित एवं कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 (उ. प्र.) से प्रकाशित
संपादक : कृष्णनाथ सहसंपादक : मुकेश